

... युद्ध का आवाज (पटव्हर्वा अष्ट्याय) ...

अगले दिन सूर्य की पहली किरण के साथ ही संग्राम का शंखनाद हुआ। युद्ध की रणभेरी बजी और इसी के साथ मेवाड व मुगलों के बीच घमासान शुरू हो गया। चित्तोड़ी भीलों के भाले और राजपुत रणबाँकुरों की तलवारें मुगलों को लहलुहान कर रही थी। इन धीर वीर योद्धाओं के आगे शत्रु सेना टिड्डी दल के समान ढेर होने लगी थी। चारों तरफ त्राहि-त्राहि हो रही थी और देखते ही देखते मुगल सेना परास्त होकर उल्टे पैर लौटने लगी थी। उसके बाद अकबर की सेना लगातार चार माह तक इस किले पर अपना आधिपत्य जमाने के प्रयास करती रही, किन्तु मुगलों को हर बार मुँह की खानी पड़ी।

वैसे चित्तोड़ का यह सुदृढ़ गढ़ आज तक भी अजेय रहा है और तब तो इसमें सुरक्षा की दृष्टि से प्रधान द्वार के अलावा प्रवेश के लिए अन्य कोई रास्ता भी नहीं था। इसलिए उत्साहित मेवाड़ी फौज बेखोफ होकर शत्रुदमन के लिए तैयार खड़ी थी। इस दुर्ग के बारे में कहा जाता है कि “गढ़ तो चित्तोड़गढ़ है, बाकी सभी गढ़ैया” और इसी चित्तोड़गढ़ के लिए किसी कवि ने भी लिखा है कि “मुझे न जाना गंगा-जमुना, न रामेश्वर-काशी। तीर्थराज चित्तोड़ देखने को, मेरी आँखे प्यासी।” क्योंकि ऊँचे-ऊँचे सपाट पहाड़ों को काटकर बड़े-बड़े शिलाखण्डों के प्रयोग से बनाई गई इस किले की प्राचीरें मजबूत एवं अभेद्य हैं। साथ ही इन प्राचीरों पर चारों ओर से तैनात सुरमा भी अपनी युद्धकला से किले में काल के प्रवेश को रोक रहे थे।

... घुरंवा में विस्फोट (बौलहर्वा अष्ट्याय) ...

इधर बार-बार हार के इस कंटक प्रहार से अब दिल्ली की फौज भी हताश होने लगी थी। युद्ध में असफलता एवं अपने सैनिकों की निराशा से सम्राट अकबर भी परेशान हो चुका था। वह नित्य प्रति नई-नई युक्तियों से किले को फतेह करने के बारे में सोचा करता था। आखिरकार एक दिन तय योजना के अनुसार किले के नीचे एक सुरंग बनाने के लिए खुदाई का काम प्रारंभ हो गया। मुगल सेना द्वारा गहरी खुदाई के बाद इस सुरंग में कई टन बारूद भर दिया, जो आग का स्पर्श पाकर एक भीषणतम विस्फोट के रूप में तब्दील हो गया।

इस विस्फोट की गगनभेदी आवाज से दूर-दूर तक हाहाकार होने लगा। धुएँ की कालीख से चारों तरफ अँधेरा छा गया और अभेद्य चित्तोड़गढ़ की एक मजबूत दिवार धूल-धुसरीत हो गई। जहाँ से सेकड़ों की संख्या में मुगल सैनिक किले के भीतर प्रवेश करने लगे। लेकिन रणबाँकुरों ने अपने प्राणों की परवाह किये बगैर ही दुर्ग के भीतर घुसे सभी शत्रुओं का सफाया कर डाला और उस टूटी दीवार की जगह वे खुद किले की ढाल बनकर खड़े हो गये।